विज्ञप्ति

एक प्रति - 10 रु.
एक वर्ष - 300 रु.
पन्द्रह वर्ष - 3100 रु.

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष 24 : अंक 3 : नई दिल्ली : 13-19 अप्रेल 2018

परमाराध्य आचार्यश्री महाश्रमण अहिंसा यात्रा का कुशल नेतृत्व करते हुए सानंद सुखसातापूर्वक विहार करते हुए आन्ध्रप्रदेश के विजयनगरम् में पधार गए हैं। विशाखापट्टनम् अब सन्निकट है। पूर्वनिर्धारित कार्यक्रम के अनुसार वहां पूज्यप्रवर का १० दिनों का प्रवास होगा। उस प्रवास के दौरान अक्षयतृतीया, आचार्यप्रवर का जन्मोत्सव और पट्टोत्सव समायोज्य है। तदुपरान्त पूज्यप्रवर चेन्नई की ओर यात्रा करते हुए आन्ध्रप्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों का स्पर्श करेंगे। गर्मी की दृष्टि से भारत के प्रमुख राज्यों में एक माने जाने वाले आन्ध्रप्रदेश में गर्मी की ऋतु में भी मौसम काफी अनुकूल बना हुआ है। पूज्यप्रवर के पदार्पण के पश्चात् इस राज्य में तीन अच्छी बारिश हो चुकी हैं। इन दिनों दिन में कुछ गर्मी रहती है, शेष समय वातावरण में शीतलता का अहसास होता है।

पूर्व, पश्चिम और उत्तर को पावन कर दक्षिण में प्रविष्ट हुआ महासूर्य

तेरापंथ के एकादशमाधिशास्ता का दक्षिण भारत में पावन प्रवेश

२ अप्रेल। पांव-पांव करोड़ों कदम चलकर पूर्व, पश्चिम और उत्तर को अपनी ज्योतिर्मय आभा से आलोकित करने वाला अध्यात्म जगत का महासूर्य आज दक्षिण में दृश्यमान बना तो आस्था का अंजन आंजे लाखों आंखें सूर्यमुखी की भांति आज से दक्षिण भारत पर केन्द्रित हो गईं। दो युगप्रधान गुरुओं और लाखों भक्तों के चिरपालित सपनों को अपना संकल्प बनाकर उसे सुफलतम रूप में साकार करने वाले महातपस्वी, शान्तिदूत, श्रमण संस्कृति के उद्गाता आचार्यश्री महाश्रमण ने अपने कोमल चरणों से दक्षिण भारत की धरती को स्पृष्ट कर मानों पूरे भारत को एकसूत्र में पिरो दिया।

सात वर्ष पूर्व जब तेरापंथ की जन्मभूमि केलवा में तेरापंथ के एकादशमाधिशास्ता ने सुदूर प्रान्तों की यात्रा उद्घोषणा करते हुए दो विदेशों सहित भारत के पूर्वांचल की यात्रा घोषित की थी, तब इसकी सफलता के लिए कई लोगों के मानस में तरह-तरह के संशय उभर रहे थे। कोई ऋतुजनित कष्टों से आगाह कर रहा था तो कोई उग्रवाद एवं नक्सल प्रभावित क्षेत्रों का हवाला देकर चेता रहा था। कोई वन्य प्राणियों के खतरे और अन्य जन्तुओं के प्रकोप का संकेत कर रहा था तो कोई पर्वतीय पथ पर आरोहों-अवरोहों की वस्तुस्थिति रखकर मार्ग की दुर्गमता को दर्शा रहा था, किन्तु मानव-मानव के कल्याण और सुदुर प्रान्तों में कई दशकों से रहने वाले अपने भक्तों के संभाल के लिए एक महर्षि महामानव इन सब चेतावनियों, खतरों, कष्टों की परवाह न कर बढ़ चला आर्ष सूक्त 'तिन्नाणं तारयाणं' का जीवन्त दृश्य उपस्थित करने के लिए। न केवल पृथ्वी अपितु जन-जन के हृदय को हिला देने वाला भूचाल हो या गन्तव्य से प्रतिकूल दिशा में लौटने के लिए विवश करने को उद्यत ओले बरसाता तूफान। एडी से चोटी तक कंपाने वाली कड़कड़ाती ठंड हो या एडी से चोटी तक पसीने से नहलाने वाली चिलचिलाती धूप। डाकूओं, नक्सलियों, जनजातियों के निवास स्थल बने हुए भयावह पर्वतीय क्षेत्र हों या बाघ, चीता, हाथी, गेंडा आदि हिंस्र पशुओं के आवास स्थल वन। दिल को बहलाने वाले बागान, खेत-खलिहान हों या दिल को दहलाने वाली मेघगर्जना और वज्रपात।

दृढ़संकल्पी, अतुल आत्मबली, अदम्य साहसी और समता के मूर्तिमान आदर्श आचार्यप्रवर ने अपनी मंद मुस्कान के साथ अपने पराक्रम से अनगिन संकटों, उपद्रवों, बाधाओं, उपसर्गों, कष्टों, कठिनाइयों को रौंदते

हुए केलवा के बाद पश्चिम में स्थित कच्छ, उत्तर में स्थित काठमाण्डो तथा पूर्व में स्थित काजीरंगा, कोलकाता व कटक की यात्रा सानन्द सम्पन्न कर करीब ६७ माह पूर्व किए गए अपने प्रण को मंजिल तक पहुंचा दिया। लेकिन इस मंजिल की प्राप्ति के बाद भी महातपस्वी आचार्यप्रवर को विश्राम मंजूर नहीं, इसलिए वे अब दक्षिण स्थित कन्याकुमारी की ओर अभिमुख बन गए हैं।

तेरापंथ की आचार्य परम्परा में नेपाल और भूटान की यात्रा के रूप में प्रथम विदेश यात्रा का कीर्तिमान रचने वाले आचार्यप्रवर ने हिन्दुस्तान के कई राज्यों में भी प्रथम आचार्य के रूप में यात्रा की। बंग्लादेश के सीमावर्ती क्षेत्र सहित ऐसे क्षेत्रों की सूची भी लम्बी है, जहां भिक्षुशासन के पहले आचार्य के रूप में एकादशमाधिशास्ता आचार्यप्रवर का पदार्पण हुआ। ९ नवम्बर २०१४ को दिल्ली के लालकिले से प्रारंभ हुई इस अहिंसा यात्रा के अन्तर्गत हिन्दुस्तान के तेरहवें राज्य के रूप में आन्ध्रप्रदेश में प्रवेश करने से पूर्व आचार्यप्रवर ने दिल्ली, उत्तरप्रदेश, हरियाणा, मध्यप्रदेश, राजस्थान, बिहार, पश्चिम बंगाल, नागालैण्ड, असम, मेघालय, झारखण्ड और ओड़िशा राज्यों तथा नेपाल व भूटान में करीब ८४५५ किमी की पदयात्रा की।

इस यात्रा में पूज्यप्रवर ने ऐसे क्षेत्रों का भी स्पर्श किया, जहां आचार्यों का तो क्या चारित्रात्माओं का भी पदार्पण कई वर्षों बाद अथवा प्रायः नहीं होता है। आचार्यप्रवर द्वारा की गई अतिशय परिश्रमयुक्त सार-संभाल के फलस्वरूप तेरापंथ धर्मसंघ से कम जुड़े हुए अथवा धर्म में प्रायः अरुचि रखने वाले श्रद्धालु परिवारों की आस्था घनीभूत हुई। कई नए-नए कार्यकर्ता उभरकर सामने आए और संघ व समाज को अपनी सक्रिय सेवाएं देने हेतु कृतसंकल्प बने। अन्य जैन समाज में भी जिनशासन के एक प्रमुख नायक आचार्यप्रवर के प्रति विशेष श्रद्धा और सम्मान का भाव जागृत हुआ। जैनेतर समाज तो आचार्यप्रवर के त्याग-तपोमय पावन व्यक्तित्व और असंप्रदायिक विचारों से व्यापक रूप में प्रभावित हुआ। किसी समय अनार्य कहे जाने वाले प्रदेशों की जनता पहली बार जैन धर्म से परिचित ही नहीं बनी, अपितु प्रभावित भी हुई। पूज्यप्रवर की इस यात्रा के दौरान विभिन्न राष्ट्रों और राज्यों के राजनीतिज्ञों, प्रबुद्धजनों आदि गणमान्य लोगों और आम जनता के दिलों में जैन धर्म की छवि अमिट रूप में अंकित हो गई। हजारों लोग आचार्यप्रवर के करिश्माई व्यक्तित्व के कायल बन गए। एक भी श्रद्धालु परिवार न होने के बावजूद भी कई क्षेत्रों में जैनेतर जनता की उमड़ी भारी भीड़ अहिंसा यात्रा की व्यापक स्वीकार्यता को स्पष्ट दर्शा रही थी। पूज्यप्रवर जिस एरिया में विहरण करते, वहां की गली-गली में 'बाबा' की ही चर्चा रहती। कितने ही लोगों ने तेरापंथ की सम्यक्त्व दीक्षा स्वीकार कर आचार्यप्रवर को अपनी आस्था समर्पित की।

ज्योतिचरण के चरणस्पर्श से ज्योतित हुआ आंध्रप्रदेश

इस प्रकार पांव-पांव गांव-गांव चलकर मानवता की अलख जगाने वाले महामना परमपूज्य आचार्यप्रवर आज प्रातः करीब ६.४५ बजे पूर्वी भारत से दक्षिण भारत में प्रवेश करने के लिए ओडिशा में स्थित केरडा से आन्ध्रप्रदेश में स्थित कोमराड़ा की ओर प्रस्थित हुए। आन्ध्रप्रदेश, तमिलनाडु, कर्नाटक और तेलंगाना के सैंकड़ों लोग पूज्यप्रवर के स्वागत में पहले ही पहुंच चुके थे। पूज्यप्रवर प्रातः गत रात्रिक प्रवास स्थल से करीब सात सौ मीटर दूर स्थित ओडिशा-आंध्रा की सीमा के निकट पधारे। महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा आदि साध्वियां भी वहां उपस्थित थीं। प्रवेश के निर्धारित समय में कुछ समय अवशिष्ट था, इसलिए आचार्यप्रवर ओडिशा की सीमा में आसीन हो गए। पूज्यप्रवर ने 'प्रभु म्हारे मन मंदिर में पधारो', 'भिक्षु म्हारै प्रकट्या जी भरत खेतर में', 'ज्योति का अवतार बाबा ज्योति ले आया', 'कैसी वह कोमल काया रे' तथा 'पूज्यवर महाप्रज्ञ भगवान'-- इन गीतों का आंशिक संगान किया। तत्पश्चात् आशु कविता के रूप में मंत्री मुनि के संदर्भ में गीत की कुछ पंक्तियां फरमाईं, जो इस प्रकार हैं--

मंत्री मुनिवर का सम्मान
याद करूं मैं दूर विराजित यतिवर का अभिधान।
बहुश्रुत परिषद के संयोजक, कक्षाओं के थे आयोजक, कर्मों के हैं सदा वियोजक
तत्त्वज्ञान के कितने ज्ञाता बलिहारी मतिमान।।

तदुपरान्त पूज्यप्रवर ने 'भि.भा.रा.ज.म.मा.डा.का.तु....। तथा 'ऊँ अ.भी.रा.शि.को. नमः' का उच्चारण किया। पूज्यप्रवर के निर्देश पर साध्वीप्रमुखाजी ने मंगलपाठ उच्चरित किया। साध्वीप्रमुखा ने स्वरचित दो पद्य भी पूज्यप्रवर के सम्मुख उच्चरित किए, जो इस प्रकार हैं-

दक्षिण भारत देश का है सांस्कृतिक प्रदेश।
महाश्रमण का मोदमय मंगल आज प्रवेश।।
आंध्रा के आकाश में खिला अनूठा रंग।
आध्यात्मिक आलोक से स्नात चतुर्विध संघ।।

तदुपरान्त साध्वीप्रमुखाजी ने पूज्यप्रवर से निवेदन किया--'परम पूज्य गुरुदेव की दक्षिण यात्रा मंगलमय हो। पूज्यप्रवर का स्वास्थ्य पूरी तरह निरामय रहे। इस यात्रा में भी पूज्यप्रवर पूरे धर्मसंघ और अन्य जनता को अध्यात्म का अमृत बांटते रहें।'

आचार्यप्रवर ने भी आशु रचित एक पद्य फरमाया, जो इस प्रकार है-

साध्वीप्रमुखा साथ है, साधु-साध्वियां साथ।
धर्मसंघ भी साथ है, मस्तक पर प्रभु हाथ।।

आंध्रप्रदेश की सीमा में प्रवेश से पूर्व ओडिशावासियों ने पूज्यचरणों में मंगलभाव अर्पित करते हुए मंगलपाठ का श्रवण किया। परमपूज्य आचार्यप्रवर ने पूर्व निर्धारणानुसार ७.२१ बजे ज्योंही आंध्रप्रदेश की सीमा में प्रवेश किया, जयनिनादों से वातावरण गुंजायमान हो उठा। दक्षिणवासी प्रसन्नता से झूम उठे। पूज्यचरणों का अनुगमन करता हुआ साधु समुदाय तथा उसके बाद साध्वी समुदाय भी आंध्रप्रदेश की सीमा में प्रविष्ट हुआ। मार्ग के दायीं ओर उल्लसित पुरुष खड़े थे तो बांयीं ओर प्रफुल्लित महिलाएं। आचार्यप्रवर अपने करकमलों से आशीषवृष्टि करते हुए गतिमान थे। आंध्रप्रदेश, तमिलनाडु, कर्नाटक और तेलंगाना के श्रद्धालु क्रमशः कतारबद्ध होकर खड़े थे। पूज्यप्रवर के निकट पधारते ही वे पूज्यचरणों में अपनी प्रणति अर्पित कर पावन आशीष प्राप्त कर रहे थे। श्रद्धालुओं ने पूज्यप्रवर से प्रवेश के संदर्भ में मंगल के रूप में गुड़ आदि पदार्थ स्वीकार करने की प्रार्थना की तो पूज्यप्रवर ने उनकी ओर अभिमुख होकर फरमाया- 'धम्मो मंगल मुक्किट्ठं।' इस प्रकार सबके श्रद्धाभावों को स्वीकार करते हुए पूज्यप्रवर गन्तव्य स्थल की ओर आगे बढ़े।

मार्ग के परिपार्श्व में बह रही नागावली नदी काफी दूर तक अहिंसा यात्रा की सहचारी बनी रही। विहार के दौरान इन्द्रापुर और रामभद्रपुरम् के ग्रामीण पूज्यप्रवर के दर्शन व पावन आशीष से लाभान्वित हुए। पूज्यप्रवर करीब ८.० कि.मी. का विहार सम्पन्न कर कोमराडा स्थित ए.पी.टी.डब्ल्यू.आर. स्कूल में पधरे। आज का प्रवास यहीं हुआ। विधालय के शिक्षकों और विधार्थियों ने कतारबद्ध और करबद्ध होकर 'वन्दे गुरुवरम्' उच्चरित करते हुए पूज्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया। 'विजयनगरम्' जिला आंध्रप्रदेश के प्रथम जिले के रूप में पूज्यचरणों से पावनता को प्राप्त हुआ। आन्ध्रा में प्रवेश के साथ पूज्यप्रवर द्वारा सन् २०११ में केलवा में घोषित यात्रा संपन्न हो गई और सन् २०१५ में विराटनगर में घोषित यात्रा प्रारम्भ हो गई।

महाश्रमण की भक्ति में दक्षिण अब तल्लीन

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान पूज्यप्रवर के पदार्पण से पूर्व मुख्यनियोजिकाजी का वक्तव्य हुआ।

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने अपने उद्‌बोधन में कहा--'परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर अहिंसा यात्रा कर रहे हैं। आचार्यप्रवर अपनी यात्रा के दौरान जिन देशों और प्रदेशों में विहरण कर रहे हैं, वहां के जैन एवं जैनेतर लोग पूज्यप्रवर के चरणों में प्रणत हो जाते हैं। आचार्यप्रवर के आभामंडल से लोग प्रभावित होते हैं। परम पूज्य आचार्यप्रवर जन-जन के कल्याण के लिए यात्रा कर रहे हैं। आचार्यप्रवर ने यात्रा का लक्ष्य निर्धारित किया और उस लक्ष्य को अपने जीवन का अंग बनाया। उसी के बारे में सोचा, उसी विचार को जीना शुरू किया। अपने मस्तिष्क और शरीर के कण-कण में उस विचार को रमा दिया। आचार्यप्रवर की संकल्पशक्ति इतनी पुष्ट है कि एक के बाद एक अपने निर्धारित लक्ष्य को साधते हुए आगे बढ़ रहे हैं। इसी लक्ष्य साधना की दिशा में आचार्यप्रवर ने अपनी ओड़िशा यात्रा संपन्न कर दक्षिण में प्रवेश किया। आचार्यप्रवर दक्षिण में भी परोपकार की भावना से अभिभूत होकर पधारे हैं, ऐसा लगता है।

शम-सम-श्रम के देवता और शान्ति के दूत।
दृढ़संकल्पी आर्यवर जनता भरे सबूत।।

आचार्यप्रवर ने जिस समय ओड़िशा से दक्षिण की धरती पर अपने चरण टिकाए, उस समय का प्राकृतिक वातावरण बहुत सुन्दर था। मैंने देखा कि आचार्यप्रवर के एक ओर बंगाल की खाड़ी बह रही है और दूसरी ओर ऊंची-ऊंची पहाड़ियां खड़ी हैं और बीच में राजपथ पर आचार्यप्रवर की श्वेत वाहिनी आगे बढ़ रही है। इसी भावना को मैंने चार पंक्तियों में बांधा है--

प्राची में बंगाल की खाड़ी बहे विशाल,
और प्रतीची में खड़ी उन्नत पर्वत माल।
श्वेतवाहिनी मध्य में देखा अद्‌भुत सीन,
महाश्रमण की भक्ति में दक्षिण अब तल्लीन।।

दक्षिण के बहुत लोग आए हुए हैं। वे सब महाश्रमणमय बन रहे हैं। आचार्यप्रवर की भक्ति में वे अपनी शक्ति को नियोजित करना चाहते हैं। परम पूज्य आचार्यप्रवर की यह दक्षिण यात्रा उत्तरोत्तर और अधिक प्रगति के शिखरों को छूती हुई धर्मशासन की प्रभावना में योगभूत बने, यही मंगलभावना।'

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'मोक्ष के लिए राग-द्वेष मुक्ति की साधना आवश्यक होती है। एकांत सुख अर्थात् पूर्णतया दुःखमुक्ति का स्थान मोक्ष होता है। समस्त कर्मों का क्षय कर आत्मा अपने स्वरूप में स्थापित होती है, वह मोक्ष है। जब सारा ज्ञान प्रकाशित हो जाता है, तब मोक्ष प्राप्त होता है। अज्ञान और मोह का विवर्जन कर सर्वज्ञता को प्रकाशित किया जा सकता है। जहां मोह होता है, वहां मोक्ष नहीं हो सकता और जहां मोक्ष होता है, वहां मोह नहीं रह सकता है। राग-द्वेष का त्याग होने से आदमी मोहमुक्त बन जाता है और उसका अज्ञान भी दूर हो जाता है।'

पूज्यप्रवर ने अपने प्रवचन के मध्य भगवान महावीर, आचार्य भिक्षु, आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञजी का सश्रद्धा स्मरण कर दक्षिण भारत में प्रवेश के संदर्भ में कहा--'आज हमने दक्षिण भारत की धरा पर पादन्यास किया है। जिस दक्षिण भारत में गुरुदेव तुलसी ने विहरण किया था, उसी दक्षिण भारत की धरती पर आज हम उनके शिष्य प्रविष्ट हुए हैं। दक्षिण भारत में तीन चतुर्मासों की योजना बनाई हुई है। आगे की बात अभी अघोषित है। तीन चातुर्मास तो घोषित हैं--चेन्नई, बेंगलुरु और हैदराबाद। कोयम्बत्तूर और हुबली में मर्यादा महोत्सव घोषित हैं। अन्य क्षेत्रों में भी जाना हो सकेगा। अपेक्षाकृत एक अच्छा कालमान लेकर हम दक्षिण भारत की धरा पर प्रविष्ट हुए हैं। दक्षिण की जनता या दक्षिण में रहने वाले लोगों को भी धर्म के बारे में कुछ बताने का अवसर मिल सकेगा। दक्षिण की धरा जहां कितनी-कितनी चारित्रात्माएं पहले पधार

चुकी हैं। करीब पचास वर्ष पूर्व परम पूज्य गुरुदेव तुलसी भी दक्षिण भारत में पधारे थे। हम मानों उनका अनुगमन करते हुए आए हैं। दक्षिण भारत में प्रवेश का गुरुदेव तुलसी का और हमारा मार्ग अलग-अलग हो सकता है, किन्तु धरा तो दक्षिण की ही है। दक्षिण भारत में खूब आध्यात्मिक चेतना के जागरणा का कार्य हो, यह अभीष्ट है।'

आन्ध्रप्रदेश में प्रवेश के साथ ही हिन्दी का प्रायः अभाव हो गया। स्थानीय जनता हिन्दी भाषा को लगभग नहीं जानती। कुछ-कुछ लोग अंग्रेजी भाषा को जानते है। इसके सिवाय तो यहां पूरी तरह तेलगू भाषा का साम्राज्य है। इस कारण स्थानीय जनता से सीधा संवाद स्थापित करने के लिए कोई माध्यम की अपेक्षा रहती है। इसलिए कार्यकर्ताओं ने ध्यान देकर एक प्रबुद्ध और अनुभवी अनुवादक व्यक्ति को साथ रखने की व्यवस्था है। विशाखापट्टनम् स्थित बी.वी.के. कॉलेज के सेवानिवृत्त प्रोफेसर श्री धुव्वुरी सत्यनारायण मूर्ति ने आज से ही अनुवाद कार्य प्रारम्भ कर दिया। पूज्यप्रवर ने अपने प्रवचन के उपरान्त विधार्थियों, शिक्षकों और अन्य ग्रामीणों को अहिंसा यात्रा के संकल्प स्वीकार करने का आह्वान किया तो श्री मूर्ति ने उनका अनुवाद कर उन्हें समझाया। तत्पश्चात पूज्यप्रवर ने इच्छुक व्यक्तियों को संकल्प भी स्वीकार करवाए।

अहिंसा यात्रा प्रवक्ता मुनि कुमारश्रमणजी ने पूज्यप्रवर की पूर्वांचल यात्रा की सम्पन्नता और दक्षिण यात्रा के प्रारम्भ के संदर्भ में अपनी विचाराभिव्यक्ति दी। ओड़िशा यात्रा की सम्पन्नता के संदर्भ में संसारपक्ष में ओड़िशा से संबंधित साध्वी आदित्यप्रभाजी ने काव्य स्वरों में अपनी प्रस्तुति दी। संसारपक्ष में दक्षिण भारत से संबंधित साध्वियों ने गीत के द्वारा पूज्यचरणों का अभिनन्दन किया। साध्वी सिद्धार्थप्रभाजी और मुनि योगेशकुमारजी ने अपनी जन्मभूमि (चेन्नई) की ओर आचार्यप्रवर के स्वागत में अपनी अभिव्यक्ति दी। संसारपक्ष में दक्षिण भारत से संबंधित मुनि वर्धमानकुमारजी ने अपनी भावाभिव्यक्ति के द्वारा आचार्यप्रवर का अभिनन्दन किया।

दक्षिण भारत तेरापंथ समाज की महिलाओं ने स्वागत गीत का संगान किया। चेन्नई चतुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री धर्मचंद लूंकड़, बेंगलुरु चतुर्मास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री मूलचंद नाहर, हैदराबाद चतुर्मास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री प्रकाश बरड़िया, विशाखपट्टनम् अक्षय तृतीया व्यवस्था समिति के स्वागताध्यक्ष श्री कमल बैद, विजयवाड़ा तेरापंथी सभाध्यक्ष श्री दिनेश श्यामसुखा, विजयनगरम् तेरापंथी सभा के मंत्री श्री पद्म सुराणा, तेरापंथी महासभा के अंतर्गत आंध्रप्रदेश के आंचलिक प्रभारी श्री नरेन्द्र नाहटा, तेलंगाना आंचलिक प्रभारी श्री करणीसिंह बरड़िया, विशाखापट्टनम् तेरापंथी सभाध्यक्ष श्री सिद्धकरण आंचलिया, श्री प्रेम सेठिया, जैन तेरापंथ वेलफेयर ट्रस्ट चेन्नई के अध्यक्ष श्री देवराज आच्छा और राजमुंदरी तेरापंथी सभाध्यक्ष श्री संपतमल सुराणा ने आचार्यप्रवर के स्वागत में अपनी आस्थासिक्त अभिव्यक्ति दी। तेरापंथी महासभा के उपाध्यक्ष तथा बेंगलुरु तेरापंथी सभाध्यक्ष श्री कन्हैयालाल गिड़िया ने अपनी भावाभिव्यक्ति देते हुए अपने साथियों के साथ गीत का संगान किया। विशाखापट्टनम् तेरापंथ महिला मंडल की महिलाओं ने गीत का संगान किया।

अमरावती के विधायक श्री टी. श्रवण कुमार ने अपनी भावाभिव्यक्ति देते हुए कहा--'आचार्यश्री महाश्रमणजी ने अपनी अहिंसा यात्रा के साथ आज हमारे आंध्रप्रदेश में प्रवेश किया है, इस मौके पर मैं उनका स्वागत करता हूं। हमारे आंध्रप्रदेश में कृष्णा, गोदावरी, तुंगभद्रा आदि नदियां प्रवाहित हो रही हैं। वे आपके आभामण्डल से पावन होकर हमारे प्रदेश को और अधिक पावन बनाएंगी। आंध्रप्रदेश नया राज्य है। इस राज्य में बहुत सारी कठिनाइयां भी हैं। आपकी शक्ति और आपके प्रभाव से हमारी सारी कठिनाइयां दूर होंगी, ऐसी आशा करता हूं। आपकी यात्रा और आपके प्रवचन से जिस प्रकार सभी प्रदेशों में लोगों का कल्याण हुआ है, वैसे ही हमारे भी प्रदेश का कल्याण होगा, ऐसी मैं कामना करता हूं। आपकी पुस्तक 'द पाथ ऑफ फ्रीडम

ऑफ सॉरो' को मैंने पढ़ा है और इस पुस्तक को विधानसभा में अपने साथियों के साथ साझा भी किया है। मुझे आपके दर्शन और स्वागत करने का जो सौभाग्य प्राप्त हुआ है, यह मेरे लिए अविस्मरणीय रहेगा।'

उद्योगपति श्री जे.वी.एस. रेड्डी ने कहा--'मैं हमारे राज्य में पधारने पर आचार्यश्री महाश्रमणजी का बहुत-बहुत स्वागत-अभिनन्दन करता हूं। आप मानव कल्याण के लिए यह महान पदयात्रा कर रहे हैं। इस यात्रा से हमारे राज्य के नागरिकों में भी अहिंसा और व्यसनमुक्ति की चेतना जागेगी और हमारे राज्य की जनता का कल्याण होगा।'

जे.एस.एल. राव गारु ने कहा--'आज आचार्यश्री महाश्रमणजी के पावन चरण हमारे आंध्रप्रदेश की धरती पर पड़े हैं। मैं आंध्रप्रदेश की जनता की ओर आपका हार्दिक अभिनन्दन करता हूं। इस भूमंडल में बहुत समस्याएं हैं, आप जैसे दार्शनिक भगवान के द्वारा ही समस्याओं का निराकरण संभव है। हम आंध्रप्रदेश के लोग आपके प्रवचनों और विचारों से एक नई दिशा प्राप्त करेंगे।'

महामेघ की सेवा में मेघसमूह

३ अप्रेल। परम पावन आचार्यप्रवर ने प्रातः कोमराडा से सिविनी की ओर प्रस्थान किया। मार्गवर्ती 'कुमारड़ा' गांव में दर्शनार्थ खड़े ग्रामीणों के निकट पूज्यप्रवर ने अपने चरण थामकर पावन प्रतिबोध प्रदान किया। पूज्यप्रवर के निर्देशानुसार मुनि वर्धमानकुमारजी ने उन्हें तेलगू भाषा में अहिंसा यात्रा के विषय में जानकारी दी। पूज्यप्रवर ने कुछ क्षण रुककर मार्ग के परिपार्श्व में लगे काजू और चीकू के वृक्षों पर दृष्टिपात किया। 'कोटीपम', 'गंगाराईवालसा', 'स्वामी नायडू वालसा', 'अर्थम', तथा 'गुमड़ा' के ग्रामीण भी पूज्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीर्वाद से लाभान्वित हुए।

आज सूर्योदय से पूर्व ही आसमान में बादल छाए हुए थे। बादलों के कारण करीब छह कि.मी. के विहार तक सूर्य अदृश्य ही बना रहा। उसके बाद वह दृष्टिगोचर हुआ, किन्तु उसकी तेजस्विता में बलवत्ता प्रतीत नहीं हुई। इसलिए प्रायः पूरे विहार में आतप से बचाव हो गया। लगभग १३.३ कि.मी. का विहार संपन्न कर आचार्यप्रवर सिविनी में स्थित सनके हाई स्कूल में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में सम्यक् ज्ञान, दर्शन और चारित्र की सम्यक् आराधना की प्रेरणा प्रदान की।

तूफान, वर्षा और गर्मी के मौसम में ठंड का अहसास

४ अप्रेल। परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर प्रातः सिविनी से नरसिपुरम् की ओर प्रस्थित हुए। मार्गवर्ती 'पार्वतीपुरम' में कई ग्रामीण समूहों ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर पावन आशीष प्राप्त की। पार्वतीपुरम् में प्रवास करने वाले जालोर के एक पुरोहित परिवार के सदस्यों ने आचार्यप्रवर के दर्शन किए तो पूज्यप्रवर ने मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। पार्वतीपुरम् में एक तेरापंथी परिवार (दूगड़) भी प्रवासित है। बताया गया कि पार्वतीपुरम् से करीब पांच कि.मी. दूरी पर 'व्हाइट ग्रेनाइट' की खदानें हैं। 'अदापशिला' नाम से ख्यात खदानों के स्थान के विषय में ज्ञात हुआ कि वह एकमात्र स्थान है, जहां से व्हाइट ग्रेनाइट निकलता है। करीब १०.० कि.मी. का विहार कर आचार्यप्रवर नरसिपुरम् में पधारे। जनहिता इंग्लिश मीडियम स्कूल में आज का प्रवास हुआ।

परम पावन आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान अपने मंगल प्रवचन में समय का सदुपयोग करने की प्रेरणा प्रदान की।

पूज्यप्रवर ने समुपस्थित विद्यार्थियों और शिक्षकों को अहिंसा यात्रा के संकल्प ग्रहण करवाए। आज के विहार पथ में 'पावर्तीपुरम्' क्षेत्र भी पूज्यचरणों से पावन हुआ। वहां निवासित एक तेरापंथी परिवार (दूगड़)

के सदस्यों ने गीत के द्वारा पूज्यचरणों में अपने भावसुमन अर्पित किए। श्रीमती गणपतदेवी दूगड़ ने पूज्यप्रवर के स्वागत में अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

आज मध्याà से आसमान में बादल उमड़ने लगे। शाम छह बजे तक आकाश मेघाच्छादित हो गया। सूर्यास्त से करीब बीस मिनिट पूर्व ही अंधेरा छा गया और तेज तूफान के साथ वर्षा प्रारम्भ हो गई। तेज तूफान के कारण डेरों, पंडाल आदि के लिए लगाए गए टेन्ट गिर गए। वर्षा का पानी पूज्यप्रवर और मुनिवृंद के प्रवास कक्षों के बाहरी बरामदे में भी आने लगा। इस कारण काफी सन्त गुरुवन्दना और प्रतिक्रमण के समय पूज्य सन्निधि में नहीं पहुंच पाए। कुछ समय पश्चात् तूफान थम गया, किन्तु वर्षा का दौर काफी देर तक जारी रही। इस कारण वातावरण में ठण्ड व्याप्त हो गई।

आन्तरिक आभूषणों से विभूषित होती है आत्मा

५ अप्रेल। परमाराध्य आचार्यप्रवर प्रातः नरसिपुरम् से सीतानगरम् की ओर प्रस्थित हुए। रात्रि में हुई बारिश का प्रभाव जमीन पर तो दिखाई दे रहा था, किन्तु आसमान में अब उसका प्रभाव प्रायः नहीं था। हल्की ठंड वातावरण में थी। ज्यों-ज्यों सूर्य ने ऊर्ध्वगमन किया, त्यों-त्यों ठंड भी नदारद होती गई। पर्वतीय क्षेत्र में वर्षा के बाद खिली हुई धूप मनहारी लग रही थी किन्तु ज्यों-ज्यों सूर्य ऊर्ध्वगमन कर रहा था, उसका आतप प्रखर बनता जा रहा था। मार्ग के समीप स्थित नारियल के सैंकड़ों वृक्षों के कारण सूर्य के आतप से यदा-कदा बचाव हो रहा था। परिपार्श्व में स्थित रेल पथ भी मानों विहार पथ का सहचारी बना हुआ था।

पार्वतीपुरम् के एक तेलगू परिवार को जब आचार्यप्रवर के विषय में अवगति मिली तो वह बाइक पर सवार होकर पूज्यप्रवर के दर्शनार्थ पहुंचा और विहार के दौरान पूज्यप्रवर के दर्शन कर पावन आशीर्वाद प्राप्त किया। मार्गवर्ती 'गुरिची' गांव में दर्शनार्थ खड़े ग्रामीणों पर भी पूज्यप्रवर ने आशीषवृष्टि की। मार्ग के समीप स्थित काजू के वृक्षों का बगीचा और आम्रकुंज पूज्यप्रवर की दृष्टि के विषय बने। 'अप्पैया पेटा' गांव के ग्रामीणों को भी पूज्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीर्वाद प्राप्त करने का सौभाग्य मिला। लगभग ६.० कि.मी. का विहार कर आचार्यप्रवर सीतानगरम् में स्थित जिला परिषद् हाइ स्कूल में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में एक रूपक के माध्यम से श्रावक के तीन मनोरथों को विश्लेषित करते हुए कहा--'गृहस्थ के मन में यह भावना रहनी चाहिए कि मेरे परिग्रह का अल्पीकरण हो जाए। अल्पीकरण के रूप में गृहस्थ को इच्छा परिमाण की साधना करनी चाहिए। जहां मेरापन कम हो जाता है, वहां अपरिग्रह की साधना अच्छी हो सकती है। एक अवस्था के बाद तो बाह्य आभूषणों से भी मुक्त बनने/रहने का और आंतरिक आभूषणों को धारण करने का प्रयत्न करना चाहिए। आंतरिक आभूषणों से आत्मा विभूषित होती है।'

बोब्बिली में शान्तिदूत का श्रद्धासिक्त स्वागत

६ अप्रेल। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने प्रातः सीतानगरम् से बोब्बिली की ओर प्रस्थान किया। आज प्रातः से ही आसमान में बादल छाए हुए थे। इस कारण विहार के दौरान सूर्य का आतप प्रायः नहीं था, किन्तु वातावरण में व्याप्त उमस कइयों के तन को पसीने से तर-बतर बना रही थी। 'चिनागोविली' गांव में दर्शनार्थ खड़े ग्रामीणों को पूज्यप्रवर ने मंगल आशीष प्रदान की। सुवणमुखी नदी पर बना पुल पूज्यचरणों से पावनता को प्राप्त हुआ। कासीपेटा के ग्रामीण भी पूज्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीर्वाद से लाभान्वित हुए। जिला परिषद के सदस्य श्री अपल नाइक तथा कासीपेटा के सरपंच श्री चंद्रशेखर आदि ने भी पूज्यचरणों में अपनी प्रणति अर्पित की।

'अंटीपेटा' गांव में पूज्यप्रवर के दर्शनार्थ खड़े ग्रामीणों की लंबी कतार को देखकर ऐसा लग रहा था मानों

पूरा गांव ही उमड़ आया हो। पूज्यप्रवर ने उन भावाभिभूत लोगों पर आशीषवृष्टि की। आचार्यप्रवर के निर्देशानुसार उन्हें तेलगू भाषा में अहिंसा यात्रा के विषय में अवगति दी गई। बोब्बिली की अभ्युदय स्कूल के विद्यार्थियों ने विद्यालय की ओर जाते हुए समूहबद्ध रूप में पूज्यप्रवर को वंदन किया। आचार्यप्रवर ने उन्हें पावन आशीर्वाद प्रदान किया। लच्छेपेटा के ग्रामीणों को भी पूज्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीर्वाद प्राप्त करने का सुअवसर मिला। बोब्बिली स्थित अनाथालय के बच्चों को प्रेरणा प्रदान करते हुए पूज्यप्रवर ने तीन पंक्तियां फरमाईं--

कोपो न कर्त्तव्यः
चौर्यं न कार्यम्
मद्यपानं न कर्त्तव्यम्

पूज्यप्रवर ने मार्ग में दर्शनार्थ खड़े बोब्बिली के लोगों को प्रेरणा प्रदान करते हुए मद्यसेवन का परित्याग करवाया। आचार्यप्रवर के बोब्बिली में पदार्पण के संदर्भ में यहां का एक मात्र तेरापंथी परिवार (चोपड़ा) अतिशय प्रफुल्लित था। बोब्बिली युवराज श्री रंगाराव गारू बेबी नायना, चेयरपर्सन तूमुल अच्युतवल्लि, आंध्र प्रदेश सरकार के अंतर्गत फाइनेंस कमेटी के मेंबर श्री तूमुल भास्कर राव आदि गणमान्य लोगों के साथ स्थानीय नागरिकों ने पूज्यप्रवर की भावभीनी अगवानी की। बोब्बिली युवराज आदि काफी दूर तक पूज्यप्रवर के आसपास पैदल चले। लगभग १२.६ कि.मी. का विहार कर पूज्यप्रवर बोब्बिली के श्री सूर्या विद्यालय में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ। आचार्यप्रवर के पदार्पण से विद्यालय परिवार में प्रसन्नता का वातावरण था।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में वाणी संयम और वाणी विवेक को आत्मसात् करने की प्रेरणा प्रदान की। पूज्यप्रवर ने प्रसंगवश कहा--'आदमी को हर स्थिति में मानसिक संतुलन बनाए रखना चाहिए। जिस आदमी का मानसिक संतुलन बना रहता है, वह तनावमुक्त और शांतियुक्त रह सकता है। चिंता, भय, तनाव आदि दुःख के कारण बनते हैं। प्रतिकूल परिस्थिति में चिंता, भय, तनाव आदि नहीं करना चाहिए, अपितु उसके समाधान का प्रयास किया जा सकता है। चिंतामुक्त और तनावमुक्त स्थिति में निर्णय भी अच्छे हो सकते हैं और मन भी पवित्र रह सकता है। आदमी को कठिनाइयों की स्थिति में अपना मनोबल बनाए रखने का प्रयास करना चाहिए। मनोबल होता है तो कठिनाइयों को झेलना भी आसान हो सकता है। मनोबल गिरते ही मानों आदमी गिर जाता है। इसलिए मनोबल दृढ़ रखने का प्रयास करना चाहिए।'

पूज्यप्रवर की प्रेरणा से बोब्बिली युवराज श्री रंगाराव गारू बेबी नायना, चेयरपर्सन तूमुल अच्युतवल्लि, स्टेट फाइनेंस कमिशन मेंबर श्री तूमुल भास्कर राव आदि गणमान्य लोगों, शिक्षकों और अन्य नागरिकों ने अहिंसा यात्रा के संकल्प स्वीकार किए।

बोब्बिली युवराज श्री रंगाराव गारू बेबी नायना ने पूज्यप्रवर के स्वागत में कहा--'आज पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी ने अपनी पावन पदरज से इस भूमि को पावन किया। इसके लिए हम सभी आपके आभारी हैं। अहिंसा यात्रा अपने आप में एक महासंकल्प है। स्वामीजी! आपकी यह पदयात्रा अपने लिए नहीं, बल्कि हम लोगों की उन्नति के लिए है। आपका सत्संग कार्यक्रम लोक कल्याण के लिए हो रहा है। हम सभी को सन्मार्ग दिखाने के लिए यहां आपका आगमन हुआ। मुझे आपके दर्शन और सेवा का सौभाग्य प्राप्त हुआ, यह मेरे जीवन की अमूल्य निधि है। मैं आपके चरणों की कोटि-कोटि वन्दना करता हूं।'

बोब्बिली चेयरपर्सन श्रीमती तूमुल अच्युतवल्लि ने कहा--'कभी किताबों में पढ़ा था या कभी सिनेमा में देखा था, किन्तु आज साक्षात् आपकी ऐसी विशाल और भव्य पदयात्रा देखकर बहुत आश्चर्य हुआ। मुझे पहले इसकी जानकारी हुई तो मैंने सोचा कि दो-चार या पांच साधु होंगे, किन्तु जब मैंने अपनी आंखों से इतनी

संख्या में साधु-साध्वियों के साथ सैंकड़ों श्रद्धालुओं को साथ चलते देखा तो मुझे घोर आश्चर्य हुआ कि किस प्रकार मानव-मानव के उद्धार के लिए आप हजारों किमी पैदल चल रहे हैं। आप जिस तरह से गांव-गांव में जाकर अपना संदेश दे रहे हैं, उससे समूचे राष्ट्र का कल्याण होने वाला है। आपकी कल्याणकारी यात्रा के प्रति मैं नतमस्तक हूं। आज के भौतिकवादी युग में इतना कष्ट सहन करना हम सभी के लिए आदर्श है। मैं आपकी अहिंसा यात्रा का अपने नगर क्षेत्र में हार्दिक स्वागत-अभिनन्दन करती हूं और आपके श्रीचरणों में प्रणाम करती हूं।'

स्टेट फाइनेंस कमिशन मेंबर श्री तूमुल भास्कर राव ने कहा--'यह हमारा सौभाग्य है कि आचार्यश्री महाश्रमणजी अपनी अहिंसा यात्रा के साथ हमारे प्रदेश के इस क्षेत्र में पधारे हैं। हम सभी के अज्ञान को दूर करने के लिए आप जैसे संत अत्यंत उपयोगी हैं। आपसे मिलने वाले ज्ञान के प्रकाश से हमारा जीवन प्रकाशपुंज बनेगा। आपने अपने चरणों के स्पर्श से हमारी धरती को पावन किया। इस सौभाग्य को प्रदान करने के लिए हम आपके आभारी हैं। आपसे प्राप्त संकल्पों का हम अपने जीवन में दृढ़ता के साथ पालन करेंगे तथा अहिंसा यात्रा के उद्देश्यों को सफल बनाने के लिए हम भी कटिबद्ध और प्रयत्नशील रहेंगे।'

विद्यालय के प्रबन्धक श्रीनिवास राव ने कहा--'इस क्षेत्र के पूर्वकृत पुण्य का प्रतिफल है जो आचार्यश्री महाश्रमणजी जैसे महान संत इस क्षेत्र में पधारे हैं और उससे भी अधिक मेरे किसी पूर्वकृत पुण्यों का उदय हुआ है जो हमारे विद्यालय में आचार्यश्री का शुभागमन हुआ है। इसके लिए मैं आचार्यश्री के श्रीचरणों की बारम्बार वंदना करता हूं।'

बोब्बिली के एकमात्र तेरापंथी परिवार (चौपड़ा) की ओर से महिलाओं ने स्वागत गीत का संगान किया। बोब्बिली में पूज्यप्रवर के प्रवास के संदर्भ में सक्रिय सहयोग देने वाले श्री रमेश साईं ने अपनी आस्थासिक्त भावाभिव्यक्ति देते हुए कहा--'मेरे दादाजी कहते थे कि कभी महात्मा गांधी बोब्बिली आए थे। महात्मा गांधी की यात्रा को तो नहीं देखा, किन्तु अपनी अहिंसा यात्रा के साथ आचार्यश्री महाश्रमणजी के यहां आगमन को मैं महात्मा गांधी की से भी बड़ा, विशाल, भव्य और जनोद्धारक अभियान मानता हूं। भगवत् स्वरूप आचार्यश्री महाश्रमणजी ने अपने पदस्पर्श से हमारी धरती को पावन कर दिया है। इसके लिए हम आचार्यश्री के प्रति कृतज्ञता अर्पित करते हैं।'

पूज्यप्रवर के प्रवास स्थल के समीप 'रेल बस' के लिए पटरी बिछी थी। बताया गया कि ब्रिटिश शासन के समय प्रारम्भ हुई 'रेल बस' भारत सरकार के अंतर्गत आज भी संचालित होती है। दिन में दो बार बोब्बिली से सालूर तक करीब सोलह किलोमीटर दूरी तय करने और 'ट्राम' जैसी दिखने वाली इस रेल बस में एक समय में करीब साठ व्यक्ति बैठ सकते हैं।

गलतियों का पुनरावर्तन नहीं, परिष्कार करो

७ अप्रेल। परमाराध्य आचार्यप्रवर ने प्रातः बोब्बिली से रामभद्रपुरम की ओर प्रस्थान किया। बोब्बिली के जैनेतर लोग पूज्यप्रवर को पहुंचाने के लिए बड़ी संख्या में उपस्थित थे। वे लोग विहार के दौरान करीब ४.० कि.मी. तक पूज्यप्रवर के आसपास चले। मार्गवर्ती सीतारामपुरम् के ग्रामीणों ने पूज्यप्रवर के दर्शन किए तो आचार्यप्रवर ने उन्हें मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। मार्ग के परिपार्श्व में बड़ी तादाद में गन्ना, भिंडी, टमाटर, कपास, तोरू, रागी, बैंगन, अरूई आदि की खेती दिखाई दे रही थी। कृषक वर्ग खेतों से पकी हुई फसल को तोड़कर एकत्रित करने में लीन था। कुछ समय पूर्व तोड़कर एकत्रित की हुई सब्जियों के ढेर लगे हुए थे। पारधी में दर्शनार्थ खड़े ग्रामीणों के निकट पूज्यप्रवर ने अपने चरण थामकर उन्हें मद्यसेवन से विरत रहने की प्रेरणा प्रदान की। रंगावती नदी पर बने पुल से पूज्यप्रवर इस पार पधारे। लगभग १२.६ कि.मी. का विहार कर पूज्यप्रवर रामभद्रपुरम में पधारे। श्री वेंकटेश्वर जूनियर कॉलेज में आज का प्रवास हुआ।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'आदमी के जीवन में गलतियां हो सकती हैं, किन्तु उसे गलतियों की पुनरावृत्ति से बचना चाहिए और गलतियों के परिष्कार का लक्ष्य रखना चाहिए। आज जो कमी जीवन में है, वह भविष्य में न रहे, यह प्रयास करना चाहिए। जो व्यक्ति कुछ कार्य करता है, उसी से गलती हो सकती है। जो कुछ करता ही नहीं, उससे क्या गलती हो सकती है। गलती हो जाने पर प्रायश्चित्त के द्वारा परिमार्जन, शोधन करने का प्रयास करना चाहिए। शुद्धीकरण के लिए सरलता आवश्यक होती है। सरलता होती है तो शुद्धीकरण अच्छा हो सकता है।

लोकतंत्र में न्यायपालिका होती है। वह दंड देने वाली होती है। न्यायपालिका के बिना अपराधों को बढ़ने का मौका मिल सकता है। दंड संहिता राष्ट्र के लिए, समुदाय के लिए और संगठन के लिए अपेक्षित होती है। धार्मिक जगत् में तो स्वयं प्रायश्चित्त करने का लक्ष्य रहना चाहिए। अपेक्षित परिष्कार होता रहे तो आत्मशुद्धि होती रह सकती है। आदमी दूसरों से अपने दोष भले छुपा ले, किन्तु कर्मों के तंत्र से तो छिपाना असंभव होता है। इस जन्म में प्रायश्चित्त नहीं किया गया तो कर्मों के कारण आगे दंड मिल सकता है।'

विशाखापट्टनम् के तेरापंथ महिला मंडल और तेरापंथ कन्या मंडल द्वारा पृथक-पृथक गीत के द्वारा पूज्यचरणों में अभिवन्दना अर्पित की गई। समुपस्थित शिक्षकों ने पूज्यप्रवर की प्रेरणा से अहिंसा यात्रा के संकल्प स्वीकार किए।

सायंकाल मौसम ने करवट ली। आसमान में बादल छा गए। सूर्यास्त के आसपास तेज वर्षा प्रारम्भ हुई, जो काफी समय तक जारी रही। वातावरण शीतलतायुक्त बन गया। भयंकर गर्मी के दिनों में आकाश में छाने वाले बादल और यदा-कदा होने वाली वर्षा स्थानीय लोगों के लिए भी आश्चर्य का विषय थी। मार्ग सेवारत श्रद्धालुओं ने बताया कि स्थानीय लोग वर्षा के विषय में परस्पर वार्तालाप करते हुए होर्डिंग्स में लगे आचार्यप्रवर के चित्र को एक-दूसरे को दिखाकर इसे आचार्यप्रवर का प्रभाव बता रहे थे।

महात्मा गांधी को नहीं देखा, किन्तु महर्षि महाश्रमण को देख लिया, हम धन्य हो गए

८ अप्रेल। परमाराध्य आचार्यप्रवर ने प्रातः 'रामभद्रपुरम्' से मरदम की ओर प्रस्थान किया। मार्ग में 'बुस्यावालासा' गांव के ग्रामीणों ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर पावन पथदर्शन प्राप्त किया। पूज्यप्रवर लगभग १२.३ कि.मी. का विहार कर मरदम में स्थित जिला परिषद हाइ स्कूल में पधारे। आज सायं तक का प्रवास यहीं हुआ। गांव के सरपंच श्री करी प्यदम्मा तथा विद्यालय के प्रधानाध्यापक श्री भास्कर राव ने पूज्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'जो इन्द्रिय विषयों में ज्यादा आसक्त रहता है, वह अपना नुक्सान कर लेता है। हर आदमी को एक सीमा तक इन्द्रियों पर कुछ नियंत्रण रखने का प्रयास करना चाहिए। आसक्ति के कारण कितने-कितने प्राणी अपना जीवन खो देते हैं। आसक्ति मानों एक राक्षसी है, जो प्राणी का जीवन लील लेती है। पांच इन्द्रियों के विषयों में आदमी को अनासक्त रहने का अभ्यास करना चाहिए। साधना का महान सूत्र है अनासक्ति। अनासक्ति जितनी बढ़ती है, साधना भी परिपुष्ट होती जाती है।

गांव के सरपंच श्री अपल नायडु ने पूज्यप्रवर के स्वागत में कहा--'यह हमारा सौभाग्य है कि अपनी अहिंसा यात्रा के साथ महान संत आचार्यश्री महाश्रमणजी हमारे गांव में पधारे हैं। मैं पूरे गांव और विद्यालय परिवार की ओर से आचार्यश्री की इस कृपावृष्टि के लिए उनके चरणों में कृतज्ञता ज्ञापित करता हूं। मुझे यह पढ़कर आश्चर्य हुआ कि आप बयालीस हजार किलोमीटर से अधिक पदयात्रा कर चुके हैं। आपकी यह यात्रा सुफल हो, ऐसी मैं कामना करता हूं।'

विद्यालय के प्रधानाध्यापक श्री भास्कर राव ने कहा--'महात्मा गांधी की पदयात्रा को तो हमने नहीं देखा,

किन्तु आचार्यश्री की इस महान पदयात्रा को साक्षात् अपने नेत्रों से देखने का सुअवसर प्राप्त हुआ है। यह हमारे जीवन का एक महत्त्वपूर्ण क्षण है। हम धन्य हो गए। आज के बिगड़ते माहौल में इस अहिंसा यात्रा की बहुत आवश्यकता है। भौतिक सुविधाओं की ओर आकर्षित हो रहे लोगों को आचार्यश्री अपने मंगल प्रवचनों से सही मार्ग पर ला रहे हैं और इससे केवल यह गांव ही नहीं, आसपास स्थित गांवों के लोग भी लाभान्वित हो रहे हैं। महर्षि आचार्यश्री! आप हम सभी को ऐसा आशीर्वाद प्रदान करें कि आपसे प्राप्त संकल्पों को हम अपने जीवन में मजबूती से अनुपालित कर सकें।'

शिक्षक सोमयाजुलु ने कहा--'आचार्यश्री महाश्रमणजी ने इतनी लंबी पदयात्रा करते हुए हमारे स्कूल को पावन किया है, जिससे हम सभी ग्रामवासी गौरव का अनुभव कर रहे हैं। आपके पदस्पर्श से यह पूरी धरती पावन हो गई है। आज हमारे विद्यालय में त्यौहार जैसा माहौल बना हुआ है। विद्यालय परिसर में एक नई बिल्डिंग (जिसमें साध्वीवृन्द का प्रवास हो रहा है।) का अभी उद्घाटन होना बाकी था, किन्तु आपके पदार्पण से इसका स्वतः ही उद्घाटन हो गया। आपकी कृपावर्षा से हमारे विद्यार्थी अनुशासन, नैतिकता और अहिंसा का अनुपालन करते हुए विद्यार्जन के क्षेत्र में भी आगे बढ़ें, ऐसी कामना करता हूं।'

आगामी कल के गंतव्य स्थल की अधिक दूरी को देखते हुए आज सायंकाल पूज्यप्रवर के विहार और प्रवास हेतु स्थान की खोज प्रारम्भ की गई। करीब पांच बजे के आसपास सूचना मिली कि लगभग साढ़े छह किलोमीटर की दूरी पर स्थान उपलब्ध हो गया है। पूज्यप्रवर ने विहार का निर्णय करते हुए कुछ क्षणों में प्रस्थान भी कर दिया। विहार के प्रारम्भ में कुछ आतप धारण किए हुए सूर्य की प्रखरता क्रमशः न्यून होती जा रही थी। गंतव्य स्थल की ज्ञात दूरी को देखते हुए समय कम प्रतीत हो रहा था। इसलिए पूज्यप्रवर ने मात्र एक ही बार उदकपान का निर्णय किया। कुछ शीघ्रता के साथ गति करते हुए पूज्यप्रवर सूर्यास्त से पूर्व ही 'पद्दमानपुरम्' गांव के बाहरी भाग में पधार गए। वहां पहुंचने पर ज्ञात हुआ कि गंतव्य की जो दूरी बताई गई थी वह लगभग एक किलोमीटर अधिक थी। गांव के बाहरी भाग में रेलवे फाटक बंद होने के कारण पूज्यप्रवर को कुछ समय प्रतीक्षा करनी पड़ी। रेल के निकल जाने के उपरान्त पूज्यप्रवर 'पद्दमानपुरम्' गांव के करीब आधा किलोमीटर भीतर स्थित जिला परिषद हाइ स्कूल में पधारे। आज का रात्रिकालीन प्रवास यहीं हुआ।

विशाल है स्वाध्याय का आकाश, उड़ान भरने वाला चाहिए

६ अप्रेल। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने प्रातः पद्दमानपुरम् से गजपतिनगरम् की ओर विहार किया। पूज्यप्रवर करीब आधा कि.मी. गांव के भीतर स्थित प्रवास स्थल से पुनः मुख्य मार्ग पर पधारे। इस दौरान कई ग्रामीणों को अपने-अपने घरों के आसपास पूज्यप्रवर के दर्शन कर पावन आशीर्वाद प्राप्त करने का सौभाग्य मिला। मार्गस्थ मारुमाली के ग्रामीण भी पूज्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीष से लाभान्वित हुए। विहार मार्ग के बांयीं ओर ऊर्ध्वगमन करता हुआ सूर्य क्रमशः तेजस्विता धारण करता जा रहा था, इस कारण आतप भी वर्धमान बना हुआ था, किन्तु भौतिक जगत् का सूर्य अध्यात्म जगत् के महासूर्य के समत्व भाव को बाधित करने में अक्षम प्रतीत हुआ। लगभग ११.५ कि.मी. का विहार कर आचार्यप्रवर गजपतिनगरम् में स्थित श्री सांई सिद्धार्थ जूनियर डिग्री कॉलेज में पधारे। आज सायंकाल तक का प्रवास यहीं हुआ। एक महर्षि को अपने प्रांगण में पाकर विद्यालय परिवार हर्षविभोर था।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अंतर्गत परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'स्वाध्याय एक तत्त्व है, जो प्रकाशकर है। वह ज्ञान प्राप्ति का सशक्त माध्यम है। जीवनकाल सीमित है, इसलिए सारभूत ज्ञान को ग्रहण करना चाहिए। स्वाध्याय में अनेक बाधाएं भी आ सकती हैं। निद्रा स्वाध्याय में बाधा उत्पन्न करने वाली बन सकती है। ज्यादा हंसी-मजाक भी ज्ञान प्राप्ति में बाधक बन सकती है। इधर-उधर की बातों में व्यर्थ रस लेना भी ज्ञान प्राप्ति में एक बाधा है।

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/2018-20 Wed.-Thu.
L.No.-U (C) 200/2018-2020
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

आदमी को ज्ञान की कुछ गहराई में जाने का प्रयास करना चाहिए। चित्त को ज्ञान में नियोजित करने का प्रयास किया जाए तो उसका विशेष हार्द प्राप्त हो सकता है। शास्त्र तो मानों समुद्र है। उसमें विशेष रूप से गोते लगाने का प्रयास हो तो ज्ञान रूपी रत्न प्राप्त हो सकता है। स्वाध्याय का आकाश विशाल है, कोई उड़ान भरने वाला चाहिए। वाचना, प्रच्छना, परिवर्तना, अनुप्रेक्षा और धर्मकथा--स्वाध्याय के ये पांच प्रकार हैं।'

पूज्यप्रवर ने प्रसंगवश कहा--'श्रम की परवाह किए बिना प्रवचन करना चाहिए। प्रवचन से प्रवचनकार और श्रोता दोनों लाभान्वित हो सकते हैं। ज्ञान को कुछ कंठस्थ करने का और कंठस्थ ज्ञान को बनाए रखने का भी प्रयास करना चाहिए। कंठस्थ ज्ञान विस्मृत न हो, इसके लिए उसका पुनरावर्तन अपेक्षित होता है। पुनरावर्तन के अभाव में कंठस्थ ज्ञान विस्मृति के गर्त में जा सकता है।'

सायंकालीन आहार के पश्चात् करीब पांच बजे परमपूज्य आचार्यप्रवर गजपतिनगरम् से बाण्डापल्ली की ओर प्रस्थित हुए। मार्ग में कुछ क्षण पूज्यप्रवर ने सान्निध्य में सन्मति शिक्षण कक्षा का क्रम रहा। पूज्यप्रवर बालमुनियों को आचारबोध का प्रशिक्षण देने के उपरान्त इन दिनों अनुकंपा की चौपाई का प्रशिक्षण प्रदान कर रहे हैं। बाण्डापल्ली के लोगों ने पूज्यचरणों में अपनी प्रणति अर्पित की। आकाश में विहरण कर रहे बादलों के कारण सूर्य अदृश्य था। शीतल बयार बह रही थी। इस कारण मौसम सुहावना बना हुआ था। पूज्यप्रवर सड़क मार्ग से गांव के भीतर पधारे। ग्रामीणों ने पूज्यप्रवर को वंदन कर पावन आशीष प्राप्त की। करीब ४.१ किमी का विहार कर पूजयप्रवर ने सूर्यास्त से कुछ समय पूर्व ही बाण्डापल्ली स्थित मंडलम् परिषद आदर्श प्राथमिक पाठशाला में पधारे। आज का रात्रिकालीन प्रवास यहीं हुआ। सूर्यास्त के कुछ समय पश्चात् ही बिजलियों के कौंधने और मेघगर्जना का क्रम शुरू हो गया। कुछ समय पश्चात् तेज वर्षा प्रारंभ हो गई। जो काफी देर तक जारी रही। वातावरण शीतलतायुक्त बन गया।

उपासक प्रशिक्षण शिविर : एक सूचना

परमपूज्य आचार्यप्रवर की पावन सन्निधि में एवं जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के तत्त्वावधान में आगामी २ अगस्त से १२ अगस्त तक चेन्नई में उपासक प्रशिक्षण शिविर की समायोजना की जा रही है। इस संदर्भ में अग्रांकित बिन्दु ध्यातव्य हैं-

- २ अगस्त को मध्याà में आयोजित प्रवेश परीक्षा में चयनित व्यक्ति ही शिविर में संभागी बन सकेंगे। प्रशिक्षण के पश्चात् १० अगस्त को परीक्षा का आयोजन किया जाएगा।
- दिनांक १०-११-१२ अगस्त को सभी उपासकों (प्रवक्ता और सहयोगी) के लिए सेमिनार व सम्मेलन आयोज्य है।

इस संदर्भ में अधिक जानकारी के लिए मो.नं. ९३२७०७१३७६, ९४१७९४४८६२ पर सम्पर्क किया जा सकता है।

विज्ञप्ति के संदर्भ में पत्र व्यवहार का पता एवं संपर्क सूत्र

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा, 3 पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट, कोलकाता 700001

मो.नं. - 7044778888 Email : vigyapti@terapanthinfo.com

ऑनलाइन विज्ञप्ति Terapanth मोबाईल एप तथा www.terapanthinfo.com पर उपलब्ध

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक- संजय खटेड़ द्वारा पवन प्रिंटर्स, जे-9 नवीन शाहदरा, दिल्ली से मुद्रित तथा अणुव्रत भवन, 210 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली- 110002 से प्रकाशित। सम्पादक : छगनसिंह सांखला